ॐ श्रीगणेशाय नमः ॐ

अथ वास्तु-पूजा-पद्धतिः

वास्तु-पुरुष का परिचयः

शास्त्रों में लिखा है कि जब अन्धकासुर और महादेव जी लड़ रहे थे तब महादेव जी की देह से पसीना जमीन पर गिरा। उससे एक अद्भुत जीव पैदा हुआ। वह बड़ी तेजी से बढ़ने लगा। बढ़ने की गति ऐसी थी कि वह कुछ ही देर में अपनी देह से सारे संसार को ढक लेता। देवतागण बकचकाये और डर भी गये। आखिर क्रुद्ध हो उन्होंने मिलकर उस भयङ्कर जीव को औंधे-मुह पटक कर जमीन में गाड़ दिया और उसी पर वे बस गये। देवताओं के उसपर बसने के कारण ब्रह्मा जी ने उसका नाम 'वास्तु-पुरुष' रक्खा और उसकी पूजा की प्रथा चलाई ॥

वास्तुपूजा की आवश्यकता और उसका समय–

नये स्थान पर मकान बनाने के दिन और मकान में वास लेने के दिन, अगर वास्तुपुरुष पूजे नहीं जाते हैं तो वह मकान सूना हो जाता है। भूत-प्रेत राक्षसगण वहाँ नाना विघ्न किया करते हैं। अतः जो धन-जन की उन्नति के साथ अपनी भलाई चाहें तो कंजूसी छोड़ वास्तुपूजा अवश्य करें। कम-से-कम एकवार भी—मकान बनाने के दिन या वास (डेरा) लेने के दिन तो यह पूजा करनी ही चाहिये। इससे वास मङ्गलमय रहता है, अन्यथा अमङ्गलमय।

तालाब और कूँआ खोदने, नगर के जीर्णोद्धार करने, यज्ञ-गृह बनाने और वृक्ष रोपने के दिन भी वास्तुपूजा आवश्यक है।

वास्तुपूजा का शुभ मुहूर्त्त :-

मास: वैशाख, श्रावण, कार्तिक, अग्रहण और फाल्गुन।
आषाढ़ मध्यम है॥

पक्ष– शुक्ल॥

तिथि:– द्वितीया, तृतीया, सप्तमी, अष्टमी, द्वादशी और त्रयोदशी।
प्रतिपत्, पञ्चमी, दशमी और पूर्णिमा मध्यम है॥

नक्षत्र:—रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, अनुराधा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तरभाद्र और रेवती। अश्विनी, पुनर्वसु, ज्येष्ठा और मूल मध्यम हैं। तृण (फूस) और काष्ठ (लकड़ी) से गृहारम्भ करने में धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तरभाद्र और रेवती निषिद्ध हैं॥

वार :—सोम, बुध, गुरु, शुक्र और शनि॥

लग्न—जन्मलग्न, वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ, मिथुन, तुला, कन्या और धनु का पूर्वार्द्ध॥

वास्तुपूजा का स्थान :-

वास्तु देवता नागरूप में वासस्थान में बाएँ करोठ से सोए रहते हैं। वह भादो, आश्विन और कार्तिक में पूरब दिशा में शिर कर; अग्रहण, पौष और माघ में दच्छिन दिशा में शिर कर; फाल्गुन, चैत और वैशाख में पच्छिम दिशा में शिर कर और जेठ, आषाढ़ और सावन में उत्तर दिशा में शिर कर सोते हैं। वास्तु नाग के शिर से लेकर पूँछ तक को पाँच भाग

में बाँटें। और उसके पहले, दूसरे, चौथे और पाँचवें भाग को छोड़ कर तीसरे भागमें दायीं तरफ (नाभि-स्थान में) वास्तु-खात (गड्ढा) खोदकर उसमें वास्तुपूजा करें। अर्थात् समूचे वासस्थान (डीह) को पूरब से पच्छिम की ओर और दच्छिन से उत्तर की ओर पाँच-पाँच भाग में बाँटें। इस तरह समूचे वासस्थान के पचीश भाग होंगे। जैसे—

१	२	३	४	५
६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५
१६	१७	१८	१९	२०
२१	२२	२३	२४	२५

अगर फाल्गुन और वैशाख में वास्तुपूजा करनी हो तो बारहवें भाग में वास्तु-खात खोदकर पूजा करें। इसी तरह आषाढ़ और सावन में आठवें भाग में, कार्त्तिक में चौदहवें भाग में और अग्रहण में अट्ठारहवें भाग में वास्तु-खात खोद कर पूजा करें॥

वास्तुपूजा विधि :—

पूजा करनेवाला नित्य-कृत्य कर ऊपर लिखे हुए के अनुसार निश्चित पूजा-स्थान में पूजा सामग्री एकत्रित कर, हाथ-पाँव धो, पवित्र आसन पर पूरब की ओर मुखकर बैठ जाय और तीन बार आचमन कर हाथ में तेकुशा, तिल और जल ले--

"ओमद्य अमुके मासि अमुके पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्रस्य श्री अमुक शर्मणः सपत्नीकस्य सपुत्रस्य सपरिवारस्योपस्थित शरीराविरोधेन विद्यमानागामि सकलापच्छान्ति-पूर्वकैतत्स्थानाधिकरणक-निर्विघ्नपूर्वक चिरकाल-वास-सुख-सौमनस्य-नैरुज्य-दीर्घायुत्व - बलपुष्टि सकल सौभाग्यावाप्तिकामः सपरिवारो वास्तुपूजनमहङ्करिष्ये ।"

इस मन्त्र से संकल्प करें। दूसरे के लिए पूजा करनेवाला "करिष्ये" के स्थान में "करिष्यामि" कहें।

तब पवित्र खन्ती या खुरपे लेकर,

ॐ यथा वै खनंति ब्रह्मा विष्णू रुद्रस्तथैव च ।
तथाऽहं खनयिष्यामि आचन्द्रार्कस्थिरो भव ॥

इस मन्त्र को पढ़कर गृहपति के हाथ से एक हाथ लम्बा, चौड़ा और गहरा एक खात (गड्ढा) आगे में खोदें। पवित्र घड़े में ब्राह्मण के द्वारा लाये हुए पानी से उस खात को :—

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावशो अनमीवो भवानः । यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शञ्चतुष्पदे स्वाहा ॥

इस मन्त्र को पढ़कर भर दें। तब अक्षत लेकर उस गड्ढे में,

'ॐ भूर्भुवः स्वर्भगवन् श्री सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ।'

इस मन्त्र से सूर्य का आवाहन कर,

एतानि पाद्यार्घाचमनीय-स्नानीय-पुनराचमनीयानि, ॐ भगवते श्री सूर्याय नमः।

इससे जल,

इदमनुलेपनम्, ॐ सूर्याय नमः।

इससे श्रीखण्ड चन्दन,

'इदं रक्तानुलेपनम्, ॐ सूर्याय नमः

इससे रक्तचन्दन,

"इदमक्षतम्, ॐ सूर्याय नमः"

इससे अक्षत,

"एतानि पुष्पाणि, ॐ सूयाय नमः"

इससे फूल,

"इदं दूर्वादलम्, ॐ सूर्याय नमः"

इससे दूर्वादल;

"इदं माल्यम्, ॐ सूर्याय नम."

इससे माला,

"इदं विल्वपत्रम्, ॐ सूर्याय नमः"

इससे विल्वपत्र,

"एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-नानाविध-नैवेद्यानि, ॐ सूर्याय नमः"

इससे धूप, दीप और नैवेद्य,

'इदमाचमनीयम्, ॐ सूर्याय नमः'

इससे आचमनीय,

'एष पुष्पाञ्जलिः, ॐ सूर्याय नमः"

इससे पुष्पाञ्जलि देकर पूजा करें। अक्षत लेकर गड्ढे में—

"ॐ भूर्भुवः स्वर्गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ"

इस मन्त्र से गणेश जी का आवाहन कर,

"एतानि पाद्यार्घ्याचमनीय स्नानीय पुनराचमनीयानि, ॐ गणपतये नमः"

इससे जल दें, इसी तरह चन्दन, अक्षत फूल आदि से पूजा कर,

ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहे व्वसो मम। आहमजानिगर्भधमात्वमजासि गर्भधम्॥

"एष पुष्पाञ्जलिः ॐ गणपतये:"

इससे पुष्पाञ्जलि दें। तब खात के पूरब ब्राह्मण के द्वारा

जल से भरे हुए एक नये घड़े को रख, उसमें—

"ॐ गङ्गाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च ।
सर्वे समुद्राः सरितः सरांसि च नदा ह्रदाः ।
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ॥"

इस मन्त्र से तीर्थों का आवाहन कर घड़े में पञ्चरत्न (सोना, चाँदी, मोती, मूँगा और लाजवर्त्त) और सर्वौषधि (एकाङ्गी, जटामसी, वच, कूढ़, झूल, हलदीं, दारुहलदी, कचूर, चम्पा और मोथा,) डालकर, ऊपर से आम्रपल्लव देकर,

'एतानि पद्यार्घ्याचमनीय-स्नानीय-पुनराचमनीयानि, ॐ शान्तिकलशाय नमः'

इससे जल,

'इदं वस्त्रम्, ॐ शान्तिकलसाय नमः'

इससे वस्त्र दें,

इसी तरह चन्दन, अक्षत, फूल, माला आदि से कलश की पूजा कर, उसपर अक्षत लेकर,

'ॐ लक्ष्मि इहागच्छ, इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से लक्ष्मी का आवाहन कर,

'एतानि पद्यार्घ्याचमनीय-स्नानीय-पुनराचमनीयानि, ॐ लक्ष्म्यै नमः'

इस मन्त्र से जल देकर, इसी तरह वस्त्र, लाक्षाभरण (लहठी), सिन्दूर, चन्दन आदि से पूजा कर ।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥
एष पुष्पाञ्जलिः ॐ लक्ष्म्यै नमः ।

इससे पुष्पाञ्जलि देवें । अक्षत लेकर कलशपर पूर्व भागमें—

'ॐ इन्द्र इहागच्छ, इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से इन्द्र का आवाहन कर—

'एतानि पाद्यादीनि, ॐ इन्द्राय नमः'

इससे जल देकर, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें ।
अक्षत लेकर कलश पर आग्नेय कोण में—

ॐ अग्ने इहागच्छ, इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से अग्नि का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ॐ अग्नये नमः'

इससे जल देकर, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें ।
अक्षत लेकर कलश पर दक्षिण भाग में—

'ॐ यम इहागच्छ इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से यम का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ॐ यमाय नमः'

इससे जल देकर, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें ।
अक्षत लेलर कलश पर नैऋर्त्य कोण में—

'ॐ निर्ऋते इहागच्छ, इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से निऋर्ति का आवाहन कर,

एतानि पाद्यादीनि, ॐ निर्ऋतये नमः,

इससे जल देकर, इसी तरह चन्दनादि से पूजा करें।
अक्षत लेकर कलश पर पश्चिम भाग में—

'ॐ वरुण इहागच्छ, इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से वरुण का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ॐ वरुणाय नमः'

इससे जल देकर, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें।
अक्षत लेकर कलश पर वायु कोण में—

'ॐ वायो इहागच्छ, इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से वायु का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ॐ वायवे नमः'

इससे जल देकर, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें।
अक्षत लेकर कलश पर उत्तर भाग में—

'ॐ कुबेर इहागच्छ, इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से कुबेर का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ॐ कुबेराय नमः'

इससे जल देकर, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें।
अक्षत लेकर ईशान कोण में—

'ॐ ईशान इहागच्छ, इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से ईशान का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ॐ ईशानाय नमः'

इससे जल देकर, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें।
अक्षत लेकर कलशपर निर्ऋति और वरुण के बीच में—

ॐ अनन्त इहागच्छ, इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से अनन्त नाग का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ॐ अनन्ताय नमः'

इससे जल देकर, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें।
अक्षत लेकर कलश पर इन्द्र और ईशान के बीच से —

'ओं ब्रह्मन्निहागच्छ, इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से ब्रह्मा का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ॐ ब्रह्मणे नमः,

इससे जल देकर इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें।
अक्षत लेकर खात में —

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजयाजया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोक-मातरः।
हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिस्तथा मे कुलदेवताः ।।

ओं गौर्य्यादि षोड़श मातर इहागच्छत इहतिष्ठत'

इस मन्त्र से मातृकाओं का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि ॐ गौर्य्यादि-षोड़श

मातृभ्यो नमः'

इससे जल देकर, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें।

अक्षत लेकर खात में—

ॐ ब्रह्मन्निहागच्छ, इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से ब्रह्मा का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ॐ ब्रह्मणे नमः'

इससे जल देकर, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें।

अक्षत लेकर खात में—

ॐ सूर्यः सोमो महीपुत्रः सोमपुत्रो बृहस्पतिः।
शुक्रः शनैश्चरो राहुः केतुश्चैव नवग्रहाः॥
ईश्वरो मा कुमारश्च विष्णुर्ब्रह्मा च वासवः।
यमः कालश्चित्रगुप्तो ग्रहाणामधिदेवताः।
अग्निरापःक्षितिर्विष्णुश शचीशक्रः प्रजापतिः।
सर्पो ब्रह्मा ग्रहाणाञ्च स्मृताः प्रत्यधिदेवताः॥
पूजयेद् गणपतिं दुर्गां वायुमाकाशमश्विनौ॥

ॐ साधिदैवत सप्रत्यधिदैवत-विनायकादि पञ्चलोकपाल सहित नवग्रहा इहागच्छत, इह तिष्ठत'

इस मन्त्र से नवग्रहों का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ओं साधिदैवत सप्र-

त्यधिदैवत विनायकादि पञ्चलोकपाल सहित नवग्रहेभ्यो नमः'

इससे जल देकर, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें।

अक्षत लेकर खात में—

'ॐ आपो ध्रुवश्च सोमश्च धरश्चैवानिलोऽनलः।
प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवो नामभिः स्मृताः॥
ॐ आपाद्यष्ट वसव इहागच्छत, इह तिष्ठत'

इस मन्त्र से आठ वसुओं का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ओं आपाद्यष्टवसुभ्योनमः

इससे जल देकर, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें।

अक्षत लेकर खात में—

'ॐ वासुकिस्तक्षकश्चैव कर्कोटः कुलिरस्तथा।
पद्मश्च शङ्खचूडश्च महापद्मो धनञ्जयः।
'ॐ वासुक्याद्यष्टनागा इहागच्छत, इह तिष्ठत'

इस मन्त्र से आठ नागों का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ओं वासुक्याद्यष्टनागेभ्यो नमः,

इस से जल देकर, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें।

अक्षत लेकर खात में—

'ओं अनन्त इहागच्छ, इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से अनन्त नाग का आवाहन कर,

ॐ हिमकुन्द प्रतीकाश नागान्तक महाफणिन्
स्थानं देहि गृहं कर्त्तुं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥

'एतानि पाद्यादीनि, एषोऽर्घ्यः ॐ अनन्ताय नमः'

इससे जल देकर, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें।

अक्षत लेकर खात में—

ॐ कूर्म इहागच्छ, इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से कूर्म का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ओं कूर्माय नमः'

इससे जल दे, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा कर,

'ॐ सर्वलक्षणसम्पन्न सर्वेश कमठाधिप !
स्थानं देहि गृहं कर्तुं विष्णुरूपिन्नमोऽस्तु ते ॥

'एष पुष्पाञ्जलिः, ओं कूर्माय नमः'

इससे पुष्पाञ्जलि दे, प्रणाम करें।

अक्षत लेकर खात में—

'ॐ वाचस्पते इहागच्छ इहतिष्ठ'

इस मन्त्र से बृहस्पति का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ओं वाचस्पतये नमः'

इससे जल दे, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें।

तिल लेकर खात में—

'ॐ विष्णो इहागच्छ, इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से विष्णु का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ओं विष्णवे नमः'

इससे जल दे, इसी तरह चन्दन, यव-तिल, फूल, तुलसी आदि से पूजा करें।

अक्षत लेकर खात मे—

ॐ वराह इहागच्छ, इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से वराह का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ओं वराहाय नमः'

इससे जल देकर, इसी तरह चन्दन अदि से पूजा करें।

अक्षत लेकर खात में—

'ओं कौशिकि इहागच्छ, इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से कौशिकी का आवाहन कर.

'एतानि पाद्यादीनि, ओं कौशिक्यै नमः'

इससे जल दे, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें।

अक्षत लेकर खात में—

'ॐ धरित्रि इहागच्छ, इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से पृथिवी का आवाहन कर,

'ओं हिरण्यगर्भे वसुधे शेषस्योपरिशायिनि।
वासं करोमि ते पृष्ठे गृहाणार्घ्यंधरित्रि मे॥
एतानि पाद्यार्घ्याचमनीय-स्नानीय-पुनरा-

चमनीयानि, ॐ धरित्र्यै नमः'

इस से जल,

'इदं वस्त्रं बृहस्पतिर्दैवतम्, ॐ धरित्र्यै नमः'

इस से वस्त्र देकर, इसी तरह चन्दन, सिन्दूर आदि से पूजा कर हाथ में फूल ले,

'ॐ यथाऽचलो गिरिर्मेरुरावासमचलं कृतम् ।
आरोपितं गृहस्तम्भं तथा त्वमचलं कुरु ॥
शुभे च लोचने देवि चतुरस्रे महीयसि ।
सुभगे शुभदे देवि गृहे काश्यपि रम्यताम् ॥
अभ्यङ्गे चाक्षते पूर्णे मूले बहुरसः सुधे ।
तुभ्यं मया कृता पूजा समृद्धिर्गृहिणः कुरु ॥
एष पुष्पाञ्जलिः ओं धरित्र्यै नमः'

इस से पुष्पाञ्जलि दे, प्रणाम करें।

अक्षत लेकर खात में—

'ओंवास्तोष्पतिं महादेवं सर्वसिद्धिविधायकम्।
शान्तिकर्त्तारमीशानं तं वास्तुंप्रणतोऽस्म्यहम् ॥
आवाहयामि देवेशं वास्तुदेवं महाबलम् ।
देवदेवं गणाध्यक्षं पातालतलवासिनम् ॥
'ॐ भूर्भुवः स्ववास्तोष्पते इहागच्छ इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से वास्तु पुरुष का आवाहन कर, नये घड़े में जल ले, उसमें सोना और कमल का फूल डाल कर, उस से —

ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः। यत्वे महे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शञ्चतुष्पदे स्वाहा।
एतानि पाद्यार्घाचमनीयस्नानीय-पुन-राचमनीयानि, ॐ वास्तोष्पतये नमः'

इससे जल.

'इदं शुक्लवासोयुगं बृहस्पतिदैवतम्
ॐ वास्तोष्पतये नमः'

इस से एक जोड़ा सफेद धोती,

'इमे यज्ञोपवीते बृहस्पतिदैवते,
ॐ वास्तोष्पतये नमः'

इस से एक जोड़ा यज्ञोपवीत,

'इदमनुलेपनम्, ॐ वास्तोष्पतये नमः'

इस से श्रीखण्ड चन्दन,

'इदं रक्तानुलेपनम्, ॐ वास्तोष्पतये नमः'

इस से रक्त चन्दन

'इदमक्षतम्, ॐ वास्तोष्पतये नमः'

इस से अक्षत,

'एतानि पुष्पाणि, ॐ वास्तोष्पतये नमः'

इससे तीन वार फूल,

'ॐ वास्तोष्पते प्रतरणो न एधिगयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दोः। अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान् प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे-शञ्चतुष्पदे स्वाहा। इदं पुष्पमाल्यम्, ॐ वास्तोष्पतये नमः'

इससे फूल की माला,

'इदं दूर्वादलम्, ॐ वास्तोष्पतये नमः'

इससे दूर्वादल,

'इदं विल्वपत्रम्, ॐ वास्तोष्पतये नमः'

इससे विल्वपत्र,

एतानि गन्धपुष्प-धूपदीप-ताम्बूल-नाना-विध-नैवेद्यानि, 'ॐ वास्तोष्पतये नमः'

उससे धूप दीप नैवेद्य;

'इदमाचमनीयम्, ॐ वास्तोष्पतये नमः'

इससे आचमनीय देकर,

ॐवास्तोष्पते सग्मया सꣳ सदा ते सक्षी महिरणवयागातुमत्याः। पहिक्षेमउतयोगे

वरुणो यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ 'एष पुष्पाञ्जलिः ॐ वास्तोष्पतये नमः'

इससे पुष्पाञ्जलि दे, प्रणाम करें।

अक्षत लेकर खात के बाहर केले के पत्ते पर—

'ॐ क्षेत्रपाल इहागच्छ इह तिष्ठत'

इस मन्त्र से क्षेत्रपाल का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ॐ क्षेत्रपालाय नमः'

इससे जल देकर, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें।

अक्षत लेकर केले के पत्ते पर—

ॐ 'क्रूरभूता इहागच्छत, इह तिष्ठ'

इस मन्त्र से क्रूर भूतों का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ॐ क्रूरभूतेभ्यो नमः'

इससे जल दे, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें।

अक्षत लेकर केले के पत्ते पर—

'ॐ ग्रामदेवता इहागच्छत इह तिष्ठत'

इस मन्त्र से ग्रामदेवताओं का आवाहन कर,

'एतानि पाद्यादीनि, ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः'

इससे जल देकर, इसी तरह चन्दन आदि से पूजा करें।

तब खम्भे या नीव के लिये खुदे हुए गड्ढे में—

'ॐ यथाऽचलो गिरिर्मेरुरावासमचलं कृतम्।
ममारोपितं गृहस्तम्भं तथा त्वमचलं कुरु ॥

इस मन्त्र से खम्भे गाड़े या ईंटों से नीव डालें।

तब पूजे गये देवताओं को,

'एषोऽर्घ्यः, ॐ सूर्याय नमः।'

'एषोऽर्घ्यः, ॐ गणपतये नमः।'

इत्यादि मन्त्रों से प्रत्येक को अर्घ्य देवें।

तब जैसा प्रबन्ध हो, घृत और पायस को या घृत, दही और उरद तथा चावल के पके हुए भात को सरवों में पूजे गए देवताओं को प्रत्येक को नीचे लिखे हुए मन्त्रों से बलि देवें। जैसे–

सूर्य को –

'ॐ सूर्यायैष सघृत-पायस-बलिर्नमः।'

गणेश को –

'ॐ गणपतये एष सघृत-पायस-बलिर्नमः।'

लक्ष्मी को –

'ॐ लक्ष्म्यै एष सघृत-पायस-बलिर्नमः।'

मातृकाओं को –

'ॐ गौर्यादि षोड़श मातृभ्य एष सघृत-पायस-बलिर्नमः।'

नवग्रहों को –

ॐ साधिदैवत सप्रत्यधिदैवत विनायकादि पञ्चक सहित नवग्रहेभ्य एष - सघृत - पायस - बलिर्नमः।

वसुओं को—

ॐ आपाद्यष्टवसुभ्य एष सघृत-पायस-बलिर्नमः ।

नागों को

ॐ वासुक्याद्यष्टनागेभ्य एष सघृत - पायस-बलिर्नमः ।

कूर्म को

ॐ कूर्मायैष सघृत-पायस-बलिर्नमः ।

पृथिवी को—

ॐ धरित्र्यै एष सघृत-पायस-बलिर्नमः ।

बृहस्पति को—

ॐ वाचस्पतये एष सघृत - पायस - बलिर्नमः ।

विष्णु को -

ॐ विष्णवे एष सघृत-पायस-बलिर्नमः ।

वराह को -

ॐ वराहायैष सघृत-पायस-बलिर्नमः ।

कौशिकी को

ॐ कौशिक्यै एष सघृत-पायस-बलिर्नमः ।

क्षेत्रपाल को

ॐ क्षेत्रपाल नमस्तुभ्यं सर्वकाम-फलप्रद ।
ममात्र विघ्नशान्त्यर्थं गृहाण त्वमिमं बलिम् ॥

ॐ क्षेत्रपालायैष सघृत-पायस-बलिर्नमः ।

क्रूर भूतों को—

ॐ क्रूरभूतेभ्य एष सघृत-पायस-बलिर्नमः ।

ग्रामदेवताओं को—

ॐ ग्रामदेवताभ्य एष सघृत-पायस-बलिर्नमः ।

इन्द्र को पूरब में—

'ॐ गजवाहनाय शक्ति-सहिताय इन्द्र-मूर्त्तये तेजोऽधिपतये बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।'

अग्नि को, आग्नेय कोण में—

'ॐ छाग वाहनाय शक्तिसहिताय वैश्वानर-मूर्त्तये तेजोऽधिपतये बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।

यम को दक्षिण में—

'ॐ महिषवाहनाय दण्डहस्ताय शक्ति-सहिताय यममूर्त्तये तेजोऽधिपतये बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।'

निर्ऋति को नैर्ऋत्य कोण में—

'ॐ गजवाहनाय खड्गहस्ताय शक्ति-सहिताय नैर्ऋतिमूर्त्तये तेजोऽधिपतये बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।'

वरुण को पश्चिम में—

'ॐ गरुड-वाहनाय शङ्खचक्र-गदा-पद्म-हस्ताय शक्तिसहिताय वरुणमूर्त्तये तेजोऽधि-पतये बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।'

वायु को वायु कोण में—

'ॐ क्षेत्रपालाय मृगवाहनाय शक्तिसहिताय वायुमूर्त्तये तेजोऽधिपतये बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।

कुबेर को उत्तर में—

'ॐ कुबेराय शक्ति-सहिताय गदाहस्ताय नर-वाहनाय सर्वयक्षाधिपतये बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।'

शिवजी को ईशान कोण में—

'ॐ वृषवाहनाय खट्वाङ्गकपाल-त्रिशूल-हस्ताय त्रिनेत्राय शक्ति-सहिताय तेजोऽधि-पतये बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।'

वासुकि को मध्यस्थान में—

'ॐ पाताल-क्षेत्रपालाय सहस्रफणाय द्वि-सहस्रलोचनाय वासुकिनागाय शक्तिसहिताय सर्व-नागाधिपतये बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।'

ब्रह्मा को आकाश में—

'ॐ आकाश ब्रह्मरूपाय हंस-वाहनाय शक्ति - सहिताय आकाश - धातु - व्यक्ताव्यक्त-रूपाय तेजोऽधिपतये बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।'

वास्तुपुरुष को —

'ॐ यज्ञभागं प्रतीक्षस्व पूजां चैव बलिर्मम ।
नमस्ते देव-देवेश मम स्वस्तिकरो भव ।।

एह्येहि वास्तोष्पते सपरिवार इमं ममोपनीतं बलिं गृहाण, मम यज्ञमच्छिद्रं कुरु, सर्वदुष्टेभ्यो रक्ष रक्ष एष सघृतपायसबलिः ॐ वास्तोष्पतये नमः ।

अन्यान्य भूतों को—

ॐ भूतानि राक्षसा वाऽपि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन ।
ते गृह्णन्तु बलिं सर्वे वास्तुं गृह्णाम्यहं पुनः ।।

तब कथ (खदिर) लकड़ी के बारह अंगुल लम्बे चार कील लें, माने हुए चौकोण वासस्थल के चारों कोण पर, ईशान कोण से प्रारम्भ कर,

ॐ विशन्तु ते तले नागा लोकपालाश्च कामगाः ।
अस्मिन् वासे तु तिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा ।।

इस मन्त्र से एक-एक कील गाड़े । तब चार सरवों में घृत सहित पायस (बलि सामग्री) लेकर,

ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्वेभ्यो ये चाऽन्ये तत्समाश्रिताः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥
एष सघृतपायसबलिः प्रथमशङ्कुदेवतायै नमः ।

इस मन्त्र से ईशान कोण पर गाड़े हुए कील के पास बलि देवें । इसी तरह,

ॐ अग्निभ्योऽप्यथसर्पेभ्यो ये चान्ये तत्समाश्रिताः
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥
एष सघृतपायसबलिर्द्वितीयशङ्कुदेवतायै नमः ।

इससे आग्नेय कोण पर,

ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव निर्ऋत्यां ये च राक्षसाः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥
एष सघृतपायसबलिस्तृतीयशङ्कुदेवतायै नमः

इससे नैर्ऋत्य कोण पर,

ॐ नमो वै वायुरयभक्षो ये चान्ये तत्समाश्रिताः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥
एष सघृतपायसबलिश्चतुर्थशङ्कुदेवतायै नमः ॥

इससे वायव्य कोण पर बलि देवें ॥

दही, घृत और उरीद-भात का बलि देना हो तो "सघृत पायस" के स्थान में ,'सदधिघृतमाषभक्त" सब जगह कहें ।।

तब हाथ पाँव धोकर, आसन पर बैठ, कर (हाथ) जोड़कर,

ॐ पूजितोऽसि मया वास्तो बलिभिरर्चनैः शुभैः।
प्रसीद पाहि विश्वेश देहि मे गृहगं सुखम् ।।
ॐ वास्तुपुरुष नमस्तेऽस्तु भूशय्यानिरतप्रभो ।
मद्गृहे धन-धान्यादि समृद्धिं कुरु सर्वदा ।।
ॐ रूपं देहि यशो देहि भाग्यं भगवन् देहि मे ।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामान् प्रदेहि मे ।।
ॐ भगवन् देवदेवेश त्वं पिता सर्वदेहिनाम् ।
यज्ञरूपेण भगवँस्त्वया व्याप्तं चराचरम् ।।
जानताऽजानता वापि शास्त्रोक्तं न कृतं हि यत् ।
तच्च सम्पूर्णमेवास्तु प्रसन्नो भव सर्वदा ।।
इष्टान् कामान् प्रयच्छ त्वं दुर्भाग्यं च विनाशय ।
पुत्र-पौत्रादि वृद्धिश्च सततं कुरु देव नः ।।
यावच्चन्द्रो नगाः सूर्यस्तिष्ठन्ति प्रतिपादिताः ।
तावत्त्वयाऽत्र देवेश स्थेयं भक्तानुकम्पया ।।
ॐ असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः ।

डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ॥
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा देवा विद्याधरा नगाः ।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविधायकाः ॥
जगतां शान्तिकर्त्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः ।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः ॥
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः ॥

इन मन्त्रों से प्रार्थना कर प्रणाम करें।

तब दही, अक्षत, दूर्वादल, आम्रपल्लव, बहुआर पल्लव, बचे हुए अन्न आदि और घड़े का (अर्घ्यवाला घढ़े का, कलश का नहीं) जल गड्ढे में डालकर ईशान कोण की ओर सौ पाँव चलें और आकर गड्ढे के पानी को बढ़ा हुआ देख कर समझना चाहिए कि सब अच्छा हुआ और होगा।

तब पूजे गये देवताओं के चरणोदक से कुश को भिगाकर, उससे अपने शिर पर,

ॐ पूजितदेवताः प्रीयन्ताम् ।

इस मन्त्र से अभिषेक लें। तब अर्घों में जल लेकर,

ॐ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् ।
इष्टकामप्रसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥
ॐ पूजित-देवताः क्षमध्वं स्वस्थानं गच्छत ।

इस मन्त्र से सब देवों का विसर्जन करें। तेकुशा, तिल और जल लेकर,

ओमद्य कृतैतत्सपरिवार-वास्तुपूजन - कर्म प्रतिष्ठार्थमेतावद्द्रव्यमूल्यकम् हिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहं ददे ।

इस मन्त्र से यथाशक्ति दक्षिणा दान कर उसे गड्ढे को मिट्टी से भर देवें ।

तब गृहपति परिवार के साथ पूरब की ओर मुह कर बैठ जाय और ब्राह्मण के द्वारा, शान्तिकलश के मुह पर दिए हुए आम्रपल्लव को भिगाकर शान्तिकलश के जल से।

ॐ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणो विभुः ।
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते ।।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः ।
ब्रह्मणा सहितः शेषो दिक्पालाः पान्तु ते सदा ।।
कीर्तिर्लक्ष्मीर् धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः ।
बुद्धिर्लज्जा वपुश्शान्तिस्तुष्टिः क्षान्तिश्च मातरः ।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्त देवपत्न्यः समागताः ।।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः ।
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः ।।

देव - दानव - गन्धर्वा यक्ष - राक्षस - पन्नगाः ।
ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च ।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः ।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थ - सिद्धये ॥

इन मन्त्रों से अभिषेक लें। इस अवसर पर गृहपति को सर्वौषधी से स्नान करने का विधान शास्त्रों में है। अलग प्रबन्ध नहीं हो सके तो उसी शान्तिकलश के जल से स्नान कर लें, क्योंकि उसमें भी सर्वौषधी से स्नान करने पर गृहपति को व्याधि तथा बन्धुविनाश का डर हट जाता है।

इसके बाद वास के पश्चिम ओर फल के पेड़ रोपने चाहिये। वृक्षारोपण विधि आगे दी हुई है। तब यथाशक्ति ब्राह्मणों को भोजन कराकर स्वयं भोजन करें।

॥ इति वास्तु-पूजा-विधिः ॥

इसी तरह गृहप्रवेश दिन (यद्यपि गृहप्रवेश दिन के लिये दूसरी तरह की पूजा-प्रणाली पद्धतियों में मिलती है, किन्तु व्यवहार में उस प्रणाली की पूजा नहीं देखी जाती है), तालाब और कूँआ खोदने के दिन, वृक्ष रोपने के दिन और ऐसे-ऐसे ही दूसरे अवसर पर वास्तु-पूजा करनी चाहिये। केवल संकल्प में और कहीं-कहीं पूजा के मन्त्रों में कुछ-कुछ परिवर्तन कराना

होता है। चतुर पुरोहितों को वैसे-वैसे अवसरों पर स्वयं यह कर लेना चाहिये। एक-दो संकल्प नीचे दिये जाते हैं।

गृह-प्रवेश दिन की वास्तु पूजा का संकल्प :—

ओमद्य अमुके मासि अमुके पक्षे अमुकतिथौ अमुकगोत्रस्य मम श्री अमुकशर्मणः सपरिवारस्यैतद्गृहवास्तु - सर्वदोषप्रशमनपूर्वक - सर्वदुःखराहित्य - व्याधिभयराहित्य - बन्धुजनक्षयाभावपूर्वकैहिक - शतवर्षजीवित्वान्तकालिकानेककल्प-स्वर्गवासकामः सपरिवारो वास्तुपूजनमहं करिष्ये।

तालाब या कूँआ खोदने के दिन की पूजा का संकल्प—

ओमद्येत्यादि सर्वविघ्ननिवारणपूर्वक -सुजलत्वबहुकालस्थिरत्व-सर्वप्राणिप्रियत्व-देवसायुज्य-तृष्णाक्षुद्विवर्जित्व-वरुणलोकप्राप्तिपूर्वक (युग चतुष्टयावच्छिन्न-स्वर्गप्राप्तिपूर्वक) झटिति पुष्करिणी (वापी वा कूप) खननकामः सपरिवारो वास्तुपूजनमहं करिष्ये ॥

वास्तुपूजा की सामग्रियों का स्मारक :-

वस्तुमण्डल नापने के लिये रस्सी १, खन्ता या खुरपा १, तेकुशा ५, तिल, जल, घड़े २, केले के पत्ते २, गङ्गाजल, पिठार, अर्घी १, पञ्चपात्र १, अक्षत, श्रीखण्डचन्दन, रक्तचन्दन, सिन्दूर, फूल, दूर्वादल, बिल्वपत्र, तुलसी-पत्र, यव, माला ३०, पञ्चरत्न (सोना, मोती, चाँदी, मूँगा और राजावर्त) सर्वौषधी (एकाङ्गी, जटामसी, बच, कूठ, झूल, हलदी, दावुहलदी, कचूर, चम्पा और मोथा) कलश के लिये वस्त्र, लक्ष्मी के लिये लाल वस्त्र, लहठी, पृथिवी के लिये वस्त्र, वास्तु पुरुष के लिये सफेद धोती जोड़ा १, यज्ञोपवीत जोड़ा २, सोना, कमलका फूल, धूप, दीप, नैवेद्य (अँकुरी, मखाना, केला, पान, सुपारी, मिठाई और मेवा गैरह) बलिसामग्री (घृत और पायस या दही, घृत और उरद-भात) कथ लकड़ी के कील ४, सरवे ३२, गाय का दही, आम्रपल्लव २, बहुआर पल्लव, कर्मदक्षिणा, अभिषेक की दक्षिणा, फल के पेड़ के पौधे और ब्राह्मण भोजन की सामग्री ॥

अथ वृक्षरोपण विधिः

पेड़ रोपने के लिये गड्ढे खोदकर, उसमें दही और भात (बलि-सामग्री) डालकर, सोना मिले हुए पानी से गड्ढे की जमीन को सींच कर, तिल और जल लेकर,

ओमद्येत्यादि-यावदारोपणीय वृक्षपत्रपुष्प-फलादिरजोरेणु - समसंख्यवर्ष-देवसभावासकामो वृक्षानारोपयिष्ये ।

इस मन्त्र से संकल्प कर, उस गड्ढे में वनपाल, शिखिध्वज, सोम और नागराज की पञ्चोपचार पूजा कर, कर जोड़;

ॐ वसुधेति वशीतेति पुण्यदेति धरित्रि च।
नमस्ते सुभगे नित्यं द्रुमोऽयं वर्द्धतां सदा ॥

इस मन्त्र को पढ़ें। तब पौधे को,

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्द्धनम्। ऊर्व्वारुकमिव बन्धमान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

इन मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर रोप देवें ॥

अथ गृहप्रवेश विधिः

१—गृह-प्रवेश करने के समय काल राहु सम्मुख और दक्षिण न हों। यहाँ यह जानना चाहिये कि काल राहु अग्रहण, पौष और माघ में पूरब में रहता है। इसी तरह वह फाल्गुन, चैत और वैशाख में दक्षिण में जेठ, आषाढ़ और सावन में पश्चिम में और भादव, आश्विन और कार्तिक में उत्तर में रहता है ॥

२—मासः—वैशाख, आषाढ़, सावन, कार्तिक, अग्रहण और फाल्गुन ॥

३—पक्षः—शुक्ल ॥

४—तिथिः--चौठ, नवमी, चतुर्दशी रौर अमावस्या भिन्न।

५ - वारः--रवि और मङ्गल भिन्न ॥

३—नक्षत्रः—रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, हस्त, ज्येष्ठ, मूल, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठ, शतभिषा, उत्तरभाद्र-पदा और रेवती ॥

७—लग्नः—वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, वृश्चिक और कुम्भ। गोचर में सूर्य शुद्ध रहें।

८—गृहपति के चन्द्रतारानुकूल हो।

९—गृह लिपे-पुते, साफ-सुथरे रहे और दही, अक्षत; आम्रपल्लव, फूल, माला, फल आदि से शोभित रहे।

१०—ब्राह्मणों को द्रव्य और वस्त्र देकर सन्तुष्ट करें तब उनको और पूर्ण कलश को आगे कर गृहपति पत्नी और परिवार के साथ गृह में प्रवेश करें। ब्राह्मण के अभाव में गाय की पूँछ को पकड़ कर गृहपति पत्नी-परिवार के साथ गृह में प्रवेश करें ॥

इति विद्यालङ्कार श्री तेजनाथ झा विरचित

वास्तुपूजा पद्धतिः समाप्ता ॥

सर्व प्रकार की पुस्तक मिलने का पता—

कन्हैयालाल कृष्णदास,

कचहरी चौक, लहेरियासराय

(विहार)

छपकर तैयार ! छपकर तैयार !!

जो अबतक पुस्तक रूप में प्रकाशित नहीं हुई एवं बहुत दिनों से अपेक्षित शास्त्रानुकूल प्रमाणित

मधु - श्रावणी - पूजा - कथा

साधारण मिथिला भाषा में, मूल्य-७)५०

लेखक

स्व० डा० श्री तेजनाथ झा,

विद्यालंकार, विद्यावारिधि, पी०एच० डी०

अन्य मैथिली पुस्तकें :—

(१) नरोत्तम-अतिरोचक कथा काव्य
लेखक-आचार्य श्री तेजनाथ झा, विद्यालंकार। ३)

(२) घटकैती-मैथिली सामाजिक नाटक
लेखक-श्री कमल, साहित्य रत्न। ४)

(३) मैथिल ब्राम्हिणों की पंजी व्यवस्था
लेखक-श्री रमानाथ झा। ३)

नवीन संस्करण :—

(१) शूद्र विवाह पद्धति (भा० टी०) ३)००

(२) शूद्र श्राद्ध पद्धति (भा० टी०) १)००

(३) रुक्माङ्गदीय एकादसी माहात्म्य (भा० टी०) ३)००

प्राप्ति स्थान :—

कन्हैयालाल कृष्णदास

कचहरी चौक, लहेरियासराय, दरभंगा (विहार)